विमर्श बिन्दु

'विमर्शबिन्दु' पत्रिका का नया स्तम्भ है जिसमें आपको कई उत्तेजनापूर्ण मुद्दे मिलेंगे। शिक्षा से जुड़े इन मुद्दों पर आपकी प्रतिक्रिया/विचार आमन्त्रित हैं।

इस बार रिम्पी खिल्लन का लेख 'संरचना के परे' इस स्तम्भ में दिया जा रहा है। लेख में कई संवेदनशील मुद्दे बेहद संक्षिप्तीकरण के साथ उठाये गये हैं। (उदाहरण के लिए कुछ मुद्दे मोटे अक्षरों में दिए गए हैं।) और इन्हीं के आधार पर संरचना के विरूद्ध (!!) तर्क प्रस्तुत किये गये हैं। पाठक इस पर और इससे जुड़ने वाले तमाम मुद्दों को लेकर अपने विचार पत्रिका को भेज सकते हैं। चुनिन्दा विचारों/प्रतिक्रियाओं को आगामी अंकों में शामिल किया जायेगा।

संरचना से परे

❑ रिम्पी खिल्लन

शिक्षा को मानव मुक्ति का आधारभूत तत्व माना गया है क्योंकि केवल ज्ञान ही मनुष्य को मुक्त करता है। ज्ञान ही उसे अंधकार से ज्योति की ओर ले जाता है। यह बात अलग है कि यही ज्ञान उसे वेदना भी देता है और यह वेदना उसके स्वयं के अनुभूत सत्य से उत्पन्न होती है। किसी भी विचार तक पहुंचने का माध्यम भी यही ज्ञान है। इससे इतर विचार को पढ़ा या पढ़ाया तो जा सकता है, परन्तु उसके भीतर की गहनता को आत्मसात कर पाना संभव नहीं है।

यह बात केवल शिक्षा पर ही नहीं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर लागू होती है। कोई छोटा बच्चा जब अपनी शिक्षा की शुरूआत करता है और पहली ही कक्षा में कुछ बनी-बनाई आकृतियों या रूपरेखाओं का अनुसरण करने के लिये उसे कह दिया जाए, तो शिक्षा उसके लिए त्रासकारी बन जाती है, परन्तु यदि उसे कॉपी में अपने अनुसार, अपनी कल्पना के अनुसार टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींचने की स्वतंत्रता दे दी जाये तो कॉपी और पेन्सिल उसे त्रासकारी नहीं, बल्कि अपनी कल्पना को उकेरने का साधन लगती है; जैसे किसी खेल को खेलने की आनन्दकारी प्रक्रिया। इस आनन्दकारी प्रक्रिया में वह अपनी कल्पना को निरन्तर मुक्त करता है और अपने अनुभव के दायरों को निरन्तर विस्तार देता है। इसलिए शिक्षा मनुष्य को तभी मुक्त कर सकती है, जब उसके प्रथम सोपान पर ही मुक्ति की प्रक्रिया आरंभ की जाये।

शिक्षा के इस प्रथम सोपान से थोड़ा आगे चलते हैं। विद्यालय की शिक्षा में अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, परन्तु यह तभी संभव है, जब अध्यापक विद्यार्थी को किसी निश्चित अवधारणा या गन्तव्य तक जबरदस्ती न पहुंचा दे, बल्कि उस अवधारणा या बिन्दु तक विद्यार्थी एक प्रक्रिया द्वारा पहुंचे और यह प्रक्रिया उसके अपने चिन्तन या अनुभव के आधार पर निर्मित हो। इस प्रकार उसका विश्वास शिक्षक के विश्वास से निर्मित न होकर उसकी अपनी दृष्टि, अपनी अनुभूतियों और उस अनुभव को अर्जित करने के क्रम में उत्पन्न जटिलताओं से और जगत से जुड़ा हो। ऐसा इसलिए जरूरी है क्योंकि पूर्वाग्रह किसी को भी मुक्ति की ओर नहीं ले जा सकते। इसलिए अवधारणाएं अथवा सिद्धांत स्वयं किसी को मुक्त नहीं करते, बल्कि इन्हें अपने व्यक्तिगत संदर्भों में समझने की प्रक्रिया और फिर उन्हें सार्वभौमिक स्तर पर देख पाने की अर्जित दृष्टि देते हैं और इस दृष्टि का धुंधलका उस व्यक्ति को मुक्ति के पीड़ादायक मार्ग का एकाकी यात्री बनाता है।

स्कूली शिक्षा औपचारिक रूप से तो किसी व्यक्ति को स्वावलंबी बना सकती है, परन्तु नितान्त अनौपचारिक स्तर पर जीवन की जटिलताओं को समझने और जानने के औजार उपलब्ध नहीं करवाती। इसलिए इवान इलिच वि-स्कूलीकरण का ही रास्ता अपनाने पर बल देते हैं। यह बात और है कि वे वि-स्कूलीकरण के कुछ ठोस विकल्प या मॉडल हमारे सामने उपलब्ध नहीं करवा पाते। परन्तु ऐसा न कर पाना उनकी चिन्ता को गलत नहीं ठहरा देता। वास्तव में आज जब हम देख रहे हैं कि अन्य सभी संरचनाएं बाजार की ही उपसमुच्चय हैं और बाजार को ही पुष्ट करती हैं, तब ऐसे समय में केवल और केवल शिक्षा ही वह महत्वपूर्ण औजार हो सकती है, जो इस स्थिति को बदल सके; परन्तु यदि शिक्षा भी उसी औपचारिक प्रक्रिया द्वारा दी जाती रही, जो बाजार द्वारा संहिताबद्ध कर दिए गए नियमों से जुड़ी है तो शिक्षा भी अन्य संरचनाओं की तरह उसके बने रहने का ही एक साधन भर बन कर रह जाएगी और उसे ही पुष्ट करती रहेगी। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा की प्रक्रिया को नितान्त अनौपचारिक तथा स्वतंत्र किया जाए।

सूचनाओं तथा तथ्यों की बौछार भर ही विद्यार्थी को ज्ञान की ओर नहीं ले जा सकती। सूचनाओं तथा तथ्यों के भीतर तक झांकने और उनके पैदा होने के कारणों को समझने की जिज्ञासा

होना आवश्यक है । यहीं पर आकर तकनीक का महत्व कम होता है और आपसी संवाद का महत्व बढ़ता है। संवाद के लिए सूचनाओं से परे जाने वाली दृष्टि आवश्यक है जो इंटरनेट या पुस्तक या फिर तथ्य उपलब्ध नहीं करवा पाते। यहीं पर वह अन्त: प्रज्ञा काम आती है जो केवल और केवल अनौपचारिक वातावरण में ही निर्मित हो सकती है, बंधे-बंधाए पैटर्नों तथा सारणियों का अनुकरण करके नहीं।

शिक्षा का वर्तमान ढाँचा न केवल वर्तमान समाज, धर्म और संस्कृति के पूर्वनिर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए निर्मित ढांचा है, अपितु ये सब उपसमुच्चय भी आगे बाजार को ही पुष्ट करने की ओर अग्रसर हैं। ऐसे में शिक्षा अपने लिए कोई स्वतंत्र मॉडल कैसे उपस्थित कर सकती है। ज्ञान यदि केवल ज्ञान के लिए है तो इसका कोई पूर्वनिर्धारित उद्देश्य नहीं हो सकता। ज्ञान का विखंडन, किसी एक क्षेत्र में विशेषज्ञता भी इन्हीं संदर्भों में पूर्वनिर्धारित रूपरेखाओं का ही एक हिस्सा है क्योंकि ज्ञान को कभी खंडों में नहीं बांटा जा सकता। ज्ञान अपने आप में संपूर्ण होता है और उसकी सभी शाखाएं एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

आज के उत्तर आधुनिक समय में जब किसी भी वस्तु का कोई केन्द्र नहीं है, कोई एक संस्कृति नहीं है, सभी आदर्श ध्वस्त हो चुके हैं तो शिक्षा का निर्धारित पैटर्न विकसित करना यूं भी खतरनाक है। वस्तुत: यही वह समय है जब शिक्षा को भी संरचना से बाहर जीवन की चुनौतियों व जटिलताओं से संघर्षरत होकर एक पूर्वाग्रह-रहित अनौपचारिक वातावरण में ग्रहण करने की प्रक्रिया पर बल दिया जाना चाहिए हालांकि यह आज भी उतना ही कठिन है जितना कि इवान इलिच या बूचर के समय में रहा होगा। परन्तु यदि ज्ञान अर्जित करने वाले पांच प्रतिशत लोग भी यह समझ पाए हैं कि ज्ञान केवल अंधकार से ज्योति की ओर ही नहीं ले जाता अपितु सुख से यातना की ओर भी ले जाता है, तो इस यातनादायक प्रक्रिया से संवाद के लिए वे अपने लिए कुछ साथी जरूर तलाश रहे होंगे और यही तलाश शायद इवान इलिच की कल्पना को साकार कर सकती है। इन पांच प्रतिशत लोगों के बीच आपस में भी यदि संवाद की अनुकूल स्थितियां बन सकें तो शायद ज्ञान को एक अनौपचारिक माहौल में रखने की प्रक्रिया की शुरूआत हो सकेगी ।

संरचनाएं तो इससे शायद नहीं टूटें, परन्तु सरंचना से बाहर ज्ञान की स्वायत्त सत्ता का बहुत धीरे-धीरे ही सही, विकास हो सकेगा। हालांकि स्कूल और कालेजों के स्तर पर इन पांच प्रतिशत लोगों को जुटा पाना उतना ही कठिन है जितना सागर में से मोती तलाश कर पाना, परन्तु फिर भी संरचनाएं चाहें या न चाहें, इन गिनती भर लोगों का विकास हो रहा है।

हमने शिक्षा और मुक्ति के संबंध से बात शुरू की थी। अंत भी उसी बात से करते हुए फिर से मैं इसी संबंध को रखने का प्रयत्न कर रही हूँ। स्वतंत्रता अपने आप में कोई मॉडल या आदर्श नहीं है, अपितु यह मनुष्य होने के बोध की अनिवार्य शर्त है और यदि मनुष्य होने का बोध, कोई शिक्षा आपको नहीं करवा पाती तो उस शिक्षा का कोई अर्थ नहीं है। मनुष्य होने का बोध वस्तुत: एक स्तर पर हमारी निजता को सुरक्षित रखने का बोध है तो दूसरे स्तर पर उसी निजता की सीमाओं को पहचानते हुए दूसरे छोर पर खड़े व्यक्ति की निजता को सम्मान देना भी उसमें शामिल है। इस प्रकार यह स्वतंत्रता स्वच्छंदता नहीं अपितु स्वयं के मुक्त होने के साथ-साथ दूसरे को मुक्त होने देने (मुक्त करने में नहीं कह रही हूं क्योंकि ज्ञान की यात्रा व्यक्ति को स्वयं करनी होती है) की स्वतंत्रता है। ◆

शिक्षा विमर्श
शैक्षिक चिंतन एवं संवाद की पत्रिका

शिक्षा–विमर्श *लेखकों से शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े विभिन्न सामाजिक राजनैतिक विषयों पर हिन्दी में लेख, शोधपत्र व विचार आमन्त्रित करती है।*
लेख सुपाठ्य/टाइप किए हुए तथा कागज पर एक ओर लिखे होने चाहिए।
लेखों के प्रकाशन से संबंधित सूचना देने में समय लग सकता है।
भेजी गई सामग्री की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें क्योंकि अस्वीकृत रचना वापस भेजने में बिलम्ब हो सकता है।